



Textile Designs - 2



Textile Designs - 2

भारत ने हस्तशिल्प की श्रेष्ठ परंपरा को धरोहर के रूप में प्राप्त किया है। सुन्दरता से पूर्ण व सामाजिक उपयोग की वस्तुओं की रचना हेतु मानव की मूल आवश्यकता में इस परंपरा का प्रारंभ निहित है। यहां तक कि, बर्तन, चटाईयां और मेज, कुर्सी जैसी साधारण घरेलू वस्तुओं को भी प्रकृति प्रेरित शैलीगत अभिप्रायों से अलंकृत किया जाता है।

अन्य हस्तशिल्पों के अतिरिक्त भारत, वस्त्रों की समृद्धि सम्बंधी श्रेष्ठता के लिए भी प्रसिद्ध है। खुदाई से पता चलता है कि काफी पहले, तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व में सूती तन्तु को वस्त्र रूप में बुना जाता था तथा छपे हुए वस्त्रों के नमूने भी प्राप्त हुए हैं।

पश्चिम के अनेक देशों के साथ भारत के व्यापार-संबंध थे तथा निर्यात होने वाली वस्तुओं में भारतीय वस्त्र भी होते थे। प्राचीन बुनाई शिल्प विधि से तैयार किए जाने वाले वस्त्र अत्यधिक कलात्मक कुशलता से बुने जाते थे।

अधिकांश भारतीय वस्त्रों को सामान्य रूप से, उनकी बुनाई में प्रयुक्त तन्तु के वर्गानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे-सूती, ऊनी, रेशमी बुनाई में प्रयुक्त प्रक्रिया जैसे-विविध प्रकार के करघे, अलंकरण या सजावट के लिए प्रयुक्त पद्धति, जैसे-छिपाई, कशीदाकारी, चित्रकारी और रंगाई।

भारत के हाथकते और हथकरघा से बुने सूती वस्त्र अपनी बारीकियों के लिए जाने जाते हैं और कभी-कभी इनकी सूक्ष्म गुणवत्ता को अभिव्यक्त करते हुए इन्हें प्रचलित रूप में 'साँझा की ओस', 'बुनी वायु' आदि संज्ञा दी जाती है। मध्यकाल में मलमल का विन्यास और बुनाई अत्यधिक परिष्कृत थी तथा पूर्वी भारत स्थित अपने विशेष केन्द्रों में निर्मित वस्त्रों के लिए हमारा देश प्रसिद्ध था।

जामदानी या कशीदाकारी की हुई मलमल, करघे और भरनी की निर्मिति है, जिसमें बुनाई के समय परिकल्पनाओं के अभिप्राय जोड़े जाते हैं।

विश्व भर में, भारतीय रेशम अपनी श्रेष्ठ गुणवत्ता तथा विविध बुनावट के लिए प्रसिद्ध है। भारत में चार प्रकार के प्राकृतिक रेशम के तन्तु पाए जाते हैं। इनमें सर्वाधिक महीन रेशम शहतूत की पत्तियों से पोषित रेशम के कीड़ों द्वारा निर्मित होता है। टसर, एरी तथा मूँगा रेशम थोड़ा खुरदरा होते हैं, क्योंकि यह अन्य वृक्षों तथा पौधों से पोषित कीड़ों द्वारा निर्मित होता है।

पश्चिम बंगाल, ओड़िशा द्वारा, मध्यप्रदेश, बिहार, असम तथा महाराष्ट्र में सादे तथा परिकल्पनात्मक बुने वस्त्र रूप में टसर के विविध प्रकार निर्मित होते हैं। असम में पहनी जाने वाली 'मेखला' में, इस प्रदेश विशेष की विशिष्टता के रूप में छोटे अभिप्रायों को बुना जाता है। बनारस की जरी या किनखाब को बनाने में चित्ताकर्षक डिजाइनों को बनाने के लिए सुनहरे या चाँदी वाले धागे से रंगीन रेशम को अन्तर्ग्रथित करने की विशेष पद्धति का उपयोग किया जाता है।

यहाँ पर कश्मीर, मैसूर (कर्नाटक), कांचीपुरम् (तमिलनाडु) और मुर्शिदाबाद (पश्चिम बंगाल) के मुलायम रेशम का जिक्र किया जा सकता है। इनमें से कुछ, विशेषकर कांचीपुरम् की साड़ियों में सुनहरे अथवा चाँदीवाले धागों की सहायता से बुने जटिल विन्यासों से युक्त किनारियाँ तथा पल्लू होते हैं। साड़ियों की गुणवत्ता का अंदाज उनकी विन्यास-बारीकी तथा वजन से लगाया जाता है।

बुने हुए वस्त्र, विशेष तौर पर साड़ियों के अन्य प्रसिद्ध केन्द्र हैं - स्वर्ण कार्य के लिए महाराष्ट्र स्थित पैठन, पटोला के लिए गुजरात स्थित पाटन, आंध्र प्रदेश स्थित नारायणपेट। ओड़िशा और आंध्रप्रदेश की इकत साड़ियाँ और पश्चिम बंगाल की बालूचरी साड़ियाँ मशहूर हैं। वस्त्र रूप में, स्थानीय दंतकथाओं को बुना जाता है और साड़ी के मुख्य भाग-पल्लू पर घर, पक्षी, फूल और अन्य घरेलू दृश्य चित्रित देखे जा सकते हैं।

India has inherited a great tradition of handicrafts which has its beginnings in Man's basic need for creating objects of beauty and social utility. Even simple household articles such as pots, mats and furniture have been decorated with stylised motifs inspired by nature.

Apart from other handicrafts, India is also famous for the excellence it has achieved in the rich variety of textiles. Excavations show that, as far back as in the third millennium B.C, cotton fibre was woven into cloth and samples of printed fabrics have also been found.

India had trade links with many countries of the West and one of the commodities being exported was Indian textiles. The fabrics produced by early weaving techniques were woven with great artistry and skill.

Most of Indian textiles can be commonly classified under the category of the fibre used, such as cotton, wool, silk, the process employed for weaving such as, types of looms, the method used for ornamentation such as, printing, embroidery, painting and dyeing.

The hand spun and hand woven cotton fabrics of India are known for their delicacy, sometimes popularly referred to as evening dew, woven air to suggest their fine quality. In the medieval period there was a great degree of sophistication in the designs and weaves of the muslins and India was famous for the fabrics produced at special centres in eastern India.

The Jamdani or embroidered muslins are the product of the loom and the shuttle in which the design motifs are added during the course of weaving.

Indian silks are known throughout the world for their superior quality and varied textures. India has four types of natural silk fibres, the finer quality is produced by the silk worms that feed on the Mulberry leaves. Tussar, Eri and Muga are of slightly coarser variety because they are produced by insects that feed on leaves of other trees and plants.

West Bengal, Odisha, Madhya Pradesh, Bihar, Assam and Maharashtra produce a large variety of Tussar both plain and with designs woven into the fabric. The 'mekhala' worn in Assam has small motifs woven which are unique to the region. Banaras brocades or Kinkhabs use a special method of interweaving coloured silk with gold or silver thread to form fascinating designs.

Special mention may be made of the soft silks of Kashmir, Mysore (Karnataka), Kanchipuram (Tamil Nadu), and Murshidabad (West Bengal). Some of these, specially the sarees of Kanchipuram have intricate designs using gold or silver threads woven into the border and pallu. The quality of the sarees are judged by their weight and delicacy of design.

The other renowned centres for woven fabrics, specially sarees are Paithan in Maharashtra for gold work, Pattan in Gujarat and Narayanpet in Andhra Pradesh for Patola, the Ikats of Odisha and Andhra Pradesh and the famous Baluchars of West Bengal. Woven into the fabric are local legends and one sees houses, palanquins, birds, flowers and domestic scenes depicted on the pallus as also in the main body of the saree.

A very special feature of some Indian woven fabrics is the use of two or more types of yarn, mention has been made of the brocades of Banaras. Using silk, cotton and artificial silk, beautiful brocade designs are produced

कुछेक भारतीय बुने हुए वस्त्रों की एक खास विशेषता है - दो या अधिक प्रकार के तागों का प्रयोग। इस संदर्भ में बनारस की जरी का उल्लेख किया जा सकता है। रेशमी, सूती तथा कृत्रिम रेशमी तागों का प्रयोग करके सुन्दर जरी का विन्यास सृजित किया जाता है, जिन्हें हिमरू तथा मशरू के नाम से जाना जाता है। मध्यकाल में नवाबों और अन्य मुस्लिम शासकों के दरबारों में राजसी पोशाकों तथा शॉलों को बनाने में हिमरू का उपयोग किया जाता था। आज भी हिमरू शालें अत्यंत लोकप्रिय हैं। मध्यप्रदेश की महेश्वरी साड़ियों में भी सूती तथा रेशमी तागों का मिश्रण है।

भारत के लगभग सभी भागों में हमें विविध प्रकार की शिल्पविधि और विन्यासों का प्रयोग करके बनाए जाने वाले कशीदाकारी युक्त वस्त्र प्राप्त होते हैं। जैसे, पंजाब का फुलकारी या बाग कशीदाकारी कार्य प्रमुख रूप से रफू टाँके से ही किया जाता है। विविध प्रकार के ज्यामितीय अभिकल्पों और प्रकृति के अभिप्रायों का प्रयोग करते हुए बुने वस्त्र को पूर्णतः कशीदाकारी से भर दिया जाता है। चंबा पहाड़ी चित्रकला से प्रभावित हिमाचल प्रदेश के चंबा रूमालों पर राधा-कृष्ण की कथाओं से ग्रहण की गई विषय वस्तुओं सहित हरे, पीले और गेरूए सूक्ष्म रंगों में कशीदाकारी की जाती है। इन रूमालों पर वृक्षों, फूलों वाली कशीदाकारी के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसमें शीशे के छोटे टुकड़ों को आड़े और साटन टाँकों की सहायता से कपड़े पर लगाया जाता है। पश्चिम बंगाल में कपड़ों की तहों और फिर सरल रफू टाँके का प्रयोग करते हुए उस पर कशीदाकारी की जाती है। इन्हें कथा के नाम से जाना जाता है और घरों में इनको विविध रूपों में प्रयोग में लाया जाता है, जैसे-तकियों के गिलाफ बनाना आदि। आज, इनको आलंकारिक निर्मिति के रूप में महत्व व कुर्तों पर किया जाता था, पर अब इस कशीदाकारी शैली को छालटी, मेज की चटाई, छोटे तौलिये आदि तैयार करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। मणिपुर में महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली फानेक किनारियों पर गहरे रंगों में महीन रेशमी धागे की कशीदाकारी की जाती है। कर्नाटक की कसूती कशीदाकारी में तिरछे टाँकों द्वारा सुन्दर ज्यामितीय अभिप्राय तैयार किए जाते हैं। यहाँ पर कशीदाकारी के क्षेत्र में धातु (सोने या काँसे के धागे) का प्रयोग करने में विशिष्टता प्राप्त उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश तथा देश के अन्य भागों के केन्द्रों का उल्लेख भी किया जा सकता है। यह कार्य बटुओं, जूतों और टोपियों पर भी किया जाता है।

विशिष्ट शिल्पकारिता का घर, कश्मीर अपनी अत्यंत बारीक कशीदाकारी के लिए भी प्रसिद्ध है। पश्मीना या शाहतूश ऊनी वस्त्र पर सुव्यवस्थित ढंग से कशीदाकारी की गई शॉलें अनेक लोगों द्वारा सँजोकर रखी गयी हैं। फर्श या भूमि पर बिछाए जाने वाले पलंगादि पर बिछाने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले अभिप्राय सामान्य प्रकृति से ग्रहण किए जाते हैं। जैसे, आम, सेब का फलना, फूलना, ट्यूलिप (एक प्रकार का फूल) आदि। ये रूढ़ शैली में अंकित होते हैं और विशिष्ट रूप से कशीदाकारी की जाती है। कश्मीर की जामावार शालें प्राचीन समय से ही प्रसिद्ध हैं, जिनको बनाने वाले आज बहुत थोड़े कलाकार रह गए हैं। महीन कढ़ाई वाली ये शॉलें, दोनों ओर से पहनी जा सकती हैं और अब ये शॉलें पुरावस्तु बन चुकी है।

गुजरात, ओडिशा, बिहार, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु जैसे कुछ राज्य अपने सुन्दर गोटा-पट्टा कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं।

वस्त्रों को सजाने और अभिकल्पित करने के लिए भारतीय कलाकार विविध रंगाई और छपाई की शैलियाँ, कार्यपद्धतियाँ अपनाते हैं। इनमें सर्वाधिक लोकप्रिय है - बाँधनी, जो राजस्थान, गुजरात, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु में पायी जाती है। बाँधनी को सामान्य भाषा में 'बंधेज' कहा जाता है। यह एक रंगाई प्रक्रिया है, जिसमें कपड़े को रंग में डुबाने पर कपड़े के बंधे हुए हिस्सों पर रंग नहीं चढ़ता। गाँठों की श्रृंखला बनाकर था विविध रंगों का प्रयोग करके कलाकार वस्त्रों को अभिकल्पित करते हैं।

known as Himru and Mashru. In the courts of the Nawabs and other Muslim rulers in the medieval period, Himru material was used for royal dresses and shawls. Even today, Himru shawls are very popular. The Maheswari sarees of Madhya Pradesh also use a mixture of cotton and silk yarns.

In nearly every part of India we find embroidered fabrics using a variety of techniques and designs, for example, the Phulkari or the Bagh embroidery work of Punjab is done mainly in darning stitch. The whole woven fabric is covered with embroidery using a variety of geometric designs and motifs from nature. The Chamba rumals of Himachal Pradesh in which the influence of Chamba pahari painting is evident, are delicately embroidered kerchiefs in subtle shades of green, yellow and ochre with themes taken from Radha and Krishna stories. All of nature including trees, flowers etc. are depicted in these rumals. Gujarat and Kutch are known for mirror work embroidery in which tiny pieces of mirror are fixed to the fabric using herringbone and satin stitch. In West Bengal, layers of old pieces of cloth are stitched together and embroidered using simple darning stitch. These are known as Kanthas and are used in the homes for different purposes like cushion covers, etc. Today they are valued as decorative pieces. Chikan work embroidery of Uttar Pradesh which is the most delicate to be found anywhere was originally done on sarees and kurtas, but is now adapted for linen, table mats, napkins, etc. In Manipur, delicate silk thread embroidery in dark colours is done on the borders of phaneks worn by women. Beautiful geometrical motifs are created in cross stitch in the Kasuti embroidery of Karnataka. Mention must also be made of the centres in Uttar Pradesh, Andhra Pradesh, Madhya Pradesh and other parts of the country that have specialised in using metal (gold or silver thread) for embroidery. This work is also done on purses, shoes and caps.

Kashmir, the home of unique craftsmanship is also known for its very fine and delicate embroidery. Neatly embroidered shawls on pashmina or shahtoosh woollen fabric and treasured by many. Chain stitch embroidery is done on woollen Namdas which are spread on the floor or used as covering on beds. The motifs used are generally taken from nature such as the mango, apple blossoms, tulip, etc, these are stylised and exquisitely embroidered. The Jamawar shawls of Kashmir, of which there are very few artists surviving today, were famous from ancient times. Embroidered so finely the shawls are reversable, and have now more or less become antique pieces.

Gujarat, Odisha, Bihar, West Bengal and Tamil Nadu are a few of the states known for beautiful applique work.

A variety of dyeing and printing techniques are employed by the Indian artists to decorate and design the fabric. The most popular of these is the tie and dye which is found in Rajasthan, Gujarat, Andhra Pradesh and Tamil Nadu. Tie and dye is commonly known as bandhej or bandhani which is resist dyeing process where the portions tied do not take on the colour in which the fabric is dipped. Making a series of knots, and using a variety of colours, the artists design the fabric.

Block or hand printing techniques differ from region to region. Direct discharge, indigo and rogan printing processes are employed in different centres of hand printing. For example, Jaipur, Chittorgarh, Nathdwara and Jaisalmer in Rajasthan are famous for their centres of printing with characteristic motifs and colour.

ब्लॉक (ढप्पा) अथवा हाथ की छपाई की शैलियाँ प्रदेशवार भिन्न होती हैं। हाथ छपाई के विभिन्न केन्द्रों में सीधे अवरोपण (छुड़ाना), नील और रोगन छपाई प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ, राजस्थान के जयपुर, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा और जैसलमेर विशिष्ट अभिप्रायों तथा रंगों से युक्त छपाई के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हैं।

आंध्रप्रदेश स्थित कलाहस्ती अपने कलमकारी कार्य के लिए प्रसिद्ध है। यह शब्द कलम (लिखने वाला पेन) और कारी (कार्य) से ग्रहण किया गया है। यह वनस्पति रंगों का प्रयोग करते हुए की जाने वाली हस्त चित्रकारी प्रक्रिया है। इसमें भूरे तथा काले रंग से की जाने वाली बहिरैखाएँ एक सुस्पष्ट व खास प्रभाव उत्पन्न करती हैं। इन्हें या तो खुले हाथ से खींचा जाता है, या फिर कलमकारी के नमूने से नकल की जाती है। पृष्ठभूमि का रंग तथा आकृति को बाद में कलाकार द्वारा भरता है। कलमकारी वाली साड़ियाँ तथा पलंग आज बहुत लोकप्रिय हैं।

बुने हुए अथवा कशीदाकारी किए वस्त्रों पर अभिप्राय पर्यावरण से प्रभावित प्रतीत होते हैं और सभी वस्त्र विन्यासों में हम संबंधित प्रदेश विशेष की संस्कृति की विशेषता व सारांश स्पष्ट देश सकते हैं। धार्मिक अथवा सामाजिक समारोहों पर पहनने अथवा अर्पित करने के लिए तैयार किए गए विशिष्ट वस्त्रों में उस अवसर के लिए विशिष्ट सामग्री या विशिष्ट अभिकल्पना का प्रयोग होता है।

देश के लगभग सभी भागों में हम वस्त्र अभिकल्पना अथवा कशीदाकारी करने वाले बुनकारों तथा परिवारों के समुदायों को एकत्रित कार्य करते हुए देख सकते हैं अनेक वस्त्रों में, चाहे वह जटिल या पेचीदा कर्घे पर बुनी कांचीवरम साड़ी हो या पश्चिम बंगाल की कथा कशीदाकारी ही क्यों न हो, उसे अंतिम रूप देने में परिवार के सभी सदस्य अपना योगदान देते हैं।

हम देखते हैं कि प्रकृति के साथ तालमेल बिठाने के लिए राजस्थान के रेगिस्तान में महिलाएँ कशीदाकारी और छपे हुए भड़कीले तथा विपरीत रंगों के वस्त्र अधिक पहनती हैं। केरल में, जहाँ पर पर्यावरण हरा-भरा है, किनारियों पर अभिप्रायों के प्रतिबंधित प्रयोग से सफेद कपड़े पसंद किए जाते हैं।

कर्घे पर अथवा धागे से काम कर रहा या चित्रकारी कर रहा कलाकार अपने हाथों से विविध बुनावट और अभिकल्पों को प्रस्तुत करते हुए हमेशा श्रेष्ठ निर्मित का प्रयास करता है। प्रत्येक निर्मित अपनी विशिष्टता लिए होती है। आज, अधिक मात्रा में मशीनों और कृत्रिम सामग्री का प्रयोग करके बुने हुए आधुनिक वस्त्र परंपरागत कलाकारों द्वारा अपनाई गई पद्धतियों और सामग्री को प्रतिस्थापित करने का प्रयत्न करते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है, क्योंकि ये हस्तशिल्प, भारतीय हस्तशिल्पियों के हाथों बड़े प्यार और यत्न से निर्मित होते हैं।

इस फोलियो में हम भारतीय वस्त्रों में प्रयुक्त की जाने वाली कुछ डिजाइनों और अभिप्रायों को प्रस्तुत कर रहे हैं, जो विविध राज्यों, जैसे-आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, असम, त्रिपुरा, मणिपुर, बंगाल, ओडिशा तथा अरुणाचल प्रदेश के हैं। चित्र कार्डों में, डिजाइन का एक छोटा भाग प्रस्तुत है। वह कशीदाकारी, बुनाई या छपाई का नमूना हो सकता है। यह डिजाइन अथवा अभिप्राय छात्रों द्वारा पूरा किया जा सकता है या दिए गए अभिप्रायों से प्रेरणा ग्रहण करके नई अभिकल्पनाएँ निर्मित की जा सकती हैं।

हमें आशा है कि इस फोलियो में प्रस्तुत चित्रों पर कार्य करने से वस्त्रों की समृद्ध परंपरा समझ में आएगी, वे उसकी सराहना कर पाएँगे और हमारे देश के वस्त्रों के रंगों, डिजाइन तथा बुनावट में छिपे सौंदर्य के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को व्यक्त करना सीखेंगे।

Kalahasti in Andhra Pradesh is noted for Kalamkari work. The term itself is derived from kalam (pen) and kari (work). It is a hand painting process using vegetable dyes. The outlines in brown and black make a bold and striking effect. These are either drawn free hand or copied from an old piece of Kalamkari. The background colour and figures are then filled in by the artist. Kalamkari sarees and bed spreads are very popular today.

Motifs and textiles, whether woven or embroidered are influenced by the environment and one can see the flavour and essence of the culture of the region in all fabric designs. Special fabrics created for wearing or offering on religious or social ceremonies use a distinct design or material specific for the occasion.

In nearly all parts of the country we find communities of weavers and families doing fabric designing or embroidery living together. In many textiles, whether it be a Kanjeevaram saree woven on a complicated loom or Kantha embroidery of West Bengal, all members of the family have contributed to the final product.

To maintain harmony with nature, one sees that in the deserts of Rajasthan, women wear bright and contrasting clothes richly embroidered and printed. In Kerala, where the environment is lush green, plain white garments with restricted use of motifs or borders are preferred.

The artist sitting behind the loom or working with thread or paints produces with his hands, a variety of textures and designs always striving for excellence. Each piece of fabric produced is unique and one of its kind. Today, modern textiles produced in bulk using machines and synthetic materials tend to replace the methods and materials used by traditional artists. Unfortunately this is true of all handicrafts and objects of utility that the Indian craftsmen made with such love and care with their hands.

In this Folio, we present a few designs and motifs used in Indian textiles. The motifs and designs of textiles are from various states such as, Andhra Pradesh, Karnataka, Tamil Nadu, Assam, Tripura, Manipur, Bengal, Odisha and Arunachal Pradesh. In the picture cards, a small part of the design is shown, whether it is a piece of embroidery, weave or print. This design or motif may be completed by the students or new designs created taking inspiration from the given motifs.

We hope that students working with the visuals provided in this Folio will understand and appreciate that rich tradition of textiles and learn to respond to the beauty in colour, design and texture found in the fabrics of our country.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियां

CREATIVE ACTIVITIES FOR STUDENTS AND TEACHERS

शिल्प बनाने की कार्य पद्धति के विषय में सीखना खेल भी हो सकता है, साथ ही साथ, उपयोगी भी। सरल सूई शिल्प से लेकर चित्र चित्रकारी, छपाई और बुनाई के रूप में वस्त्रों पर कल्पनात्मक सृजन किया जा सकता है।

नीचे, वस्त्रों के अध्ययन हेतु कुछ गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं। ऐसी गतिविधियों का उद्देश्य भारतीय वस्त्रों के सौन्दर्य और बहुमूल्यता के प्रति समझ और सराहना की भावना उत्पन्न करना और छात्रों को प्रयुक्त स्थानीय वस्त्र अभिकल्पनाओं तथा कार्य पद्धतियों के विषय में अधिक सीखने के लिए प्रोत्साहित करना है। ऐसे अध्ययनों के पूर्ण होने पर, छात्र अभिकल्पना तथा कार्यपद्धति से संबंधित अपनी ग्रहण की जानकारी को भू-प्राकृतिक दृश्यों, सामाजिक और धार्मिक त्यौहारों और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों के साथ जोड़ सकते हैं।

* अपने प्रदेश के परंपरागत वस्त्रों का अध्ययन कीजिए। वस्त्रों के सौन्दर्यपरक मूल्य को समझने के लिए बुनाई की कार्य पद्धतियों, रंगों और अभिकल्पनाओं का अवलोकन कीजिए। अन्य राज्यों के वस्त्रों के साथ एक तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

* अपने घर में पड़े पुराने वस्त्रों पर बनी अभिकल्पनाओं को एकत्रित कीजिए और एक कतरन रजिस्टर तैयार कीजिए। बुनाई हेतु अभिकल्पना को तैयार करने में प्रयोग में लाई गई गणितीय सूक्ष्मता को समझने की कोशिश कीजिए।

* प्राचीन काल के वस्त्रों व वेशभूषाओं का अवलोकन करने के लिए स्थानीय संग्रहालयों की यात्रा कीजिए। वस्त्रों द्वारा एक विशिष्ट काल के इतिहास का अध्ययन करने के लिए चित्र बनाइए।

यदि संभव हो तो, बुनाई केन्द्रों अथवा शिल्पकारों के घरों की यात्रा के कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि छात्रों को वस्त्रों को तैयार करने में प्रयुक्त विभिन्न प्रक्रियाओं की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त हो सके।

* सरल कशीदाकारी टांकों को सीखिए। एक कपड़े के विभिन्न आकारों और नाप के छोटे-छोटे टुकड़े काटकर उन्हें एक बड़े कपड़े पर व्यवस्थित कर सिलाई करिए, ताकि अभिकल्पना या डिजाइन बन सके। इसे गोटा पट्टा कार्य कहते हैं। इसी प्रकार, पुराने या सस्ते वस्त्रों के प्रयोग से जोड़-जाड़ या गुदड़ी कार्य (पैच वर्क) अभिकल्पनाओं को निर्मित किया जा सकता है।

* छात्रों को ब्लॉक (ठप्पा), मुहरा अथवा स्टेंसिल छपाई की कार्यपद्धतियों को सीखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। लकड़ी के ठप्पों पर सरल ज्यामितीय या फूल-पत्तियों से युक्त अभिकल्पनाएं बनाई जा सकती हैं। छात्रों को ठप्पा निर्माताओं और छपाई करने वालों से मिलने जाने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

* अनुरेखण कीजिए या स्वयं अपना डिजाइन बनाइए, उसे कपड़े पर उतारिए, फिर वनस्पति या पत्थरों से स्वयं अपने रंग तैयार कीजिए और अपनी अभिकल्पना को रंग देने में इनका प्रयोग कीजिए।

* बुनाई, छपाई अथवा कशीदाकारी की बुनावट, अभिकल्पना और कार्य पद्धतियों का अध्ययन करने के लिए छात्रों द्वारा एकत्रित विविध वस्त्रों की एक प्रदर्शनी आयोजित की जा सकती है। प्रदर्शनी के आवपास, छात्रों के समूह चर्चा कर सकते हैं और चित्रादि भी बना सकते हैं।

* बांधनी, चित्रकारी और छपाई की कार्य पद्धतियों का प्रदर्शन करने के लिए स्थानीय शिल्पकारों और कलाकारों को स्कूल में आमंत्रित किया जाना चाहिए। प्रदर्शन के पश्चात् छात्रों को इन पद्धतियों को कार्यान्वित करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

छात्रों को निम्नलिखित विषयों पर कहानी अथवा कविता लिखने के लिए कहा जाना चाहिए:

- कपास - यह किस क्षेत्र में उगाई जाती है, इसका तागा कैसे बनाया जाता है, बुनाई की कार्य पद्धति आदि।

- रेशम - रेशम का कीड़ा, पत्तियां, जिन पर कीड़ा पोषित होता है, कोया को संसाधित किस प्रकार किया जाता है और फिर उसे कैसे रेशम के धागे में परिवर्तित किया जाता है।

- ऊन - जानवर कहां पाए जाते हैं, लोम (फर) को कैसे हटाया जाता है और फिर उसे बुनाई के लिए तागे के रूप में कैसे तैयार किया जाता है।

इन गतिविधियों को इतिहास, भूगोल, भाषा, कला, गणित और अभिकल्पना कला के अध्ययन के साथ जोड़िए।

इस फोलियो में प्रस्तुत चित्रों को राज्यवार प्रस्तुत किया गया है।

Learning about techniques of craft making can be fun and at the same time useful. Imaginative creations can be made on textiles from simple needle crafts to painting, printing and weaving.

A few activities for the study of textiles are suggested below. The aim of such activities is to create an understanding and appreciation for the beauty and richness of Indian fabrics as also to motivate students to learn more about local fabric designs and techniques used. On completion of such studies, the students would be able to relate their findings in design and technique to the geophysical features, social and religious festivals and other areas of knowledge.

* Study the traditional textiles of your region. Observe the weaving techniques, colours, designs to understand the aesthetic values. Make a comparative study with textiles from other states.

* Collect designs on old fabrics found in your homes and make a scrapbook. Try to understand the mathematical precision that has been used in creating the design for the weave.

* Visit the local museums to observe the textiles and costumes of ancient times. Make drawings to study the history of a particular period through costumes.

If possible, visits to weaving centres or homes of craftsmen should be organised to enable the students to get a first-hand knowledge of the different processes involved in preparation of textiles.

* Learn simple embroidery stitches. Cut small pieces of cloth of different shapes and sizes of one fabric and stitch them on to a large piece to form a design. This is known as applique work. Similarly, patch work designs can be made from old or inexpensive fabrics.

* Encourage students to learn the techniques of block, stamp or stencil, printing. Simple geometric or floral designs can be made on wooden blocks. They can also be encouraged to visit block makers and printers.

* Trace or make your own design and transfer it on to the fabric then try making your own colours from vegetables or stones and use these to paint the design on the material.

* An exhibition may be organised of the various fabrics collected by students to study the texture, design and technique of weaving, printing or embroidery. Around the exhibition, groups of students can hold discussions and make drawings.

* Local craftsmen and artists may be invited to the school to demonstrate tie and dye, painting and printing techniques. Students may be encouraged to practice these after the demonstration.

Students may be asked to write a story or poem on :

- Cotton-in which area it grows, how the yarn is made, weaving techniques, etc.

- Silk - the silk worm, the leaves it feeds on, how the cocoon is treated and then made into yarn for weaving.

- Wool-where the animals are found, how the fur is removed and prepared into yarn for weaving.

Relate these activities to the study of history, geography, language, arts, mathematics and designing.

The visuals in this folio have been arranged regionwise.

छात्रों तथा अध्यापकों के लिए रचनात्मक गतिविधियाँ

CREATIVE ACTIVITIES FOR STUDENTS AND TEACHERS

शिल्प बनाने की कार्य पद्धति के विषय में सीखना खेल भी हो सकता है, साथ ही साथ, उपयोगी भी। सरल सूई शिल्प से लेकर चित्र चित्रकारी, छपाई और बुनाई के रूप में वस्त्रों पर कल्पनात्मक सृजन किया जा सकता है।

नीचे, वस्त्रों के अध्ययन हेतु कुछ गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं। ऐसी गतिविधियों का उद्देश्य भारतीय वस्त्रों के सौन्दर्य और बहुमूल्यता के प्रति समझ और सराहना की भावना उत्पन्न करना और छात्रों को प्रयुक्त स्थानीय वस्त्र अभिकल्पनाओं तथा कार्य पद्धतियों के विषय में अधिक सीखने के लिए प्रोत्साहित करना है। ऐसे अध्ययनों के पूर्ण होने पर, छात्र अभिकल्पना तथा कार्यपद्धति से संबंधित अपनी ग्रहण की जानकारी को भू-प्राकृतिक दृश्यों, सामाजिक और धार्मिक त्यौहारों और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों के साथ जोड़ सकते हैं।

* अपने प्रदेश के परंपरागत वस्त्रों का अध्ययन कीजिए। वस्त्रों के सौन्दर्यपरक मूल्य को समझने के लिए बुनाई की कार्य पद्धतियों, रंगों और अभिकल्पनाओं का अवलोकन कीजिए। अन्य राज्यों के वस्त्रों के साथ एक तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

* अपने घर में पड़े पुराने वस्त्रों पर बनी अभिकल्पनाओं को एकत्रित कीजिए और एक कतरन रजिस्टर तैयार कीजिए। बुनाई हेतु अभिकल्पना को तैयार करने में प्रयोग में लाई गई गणितीय सूक्ष्मता को समझने की कोशिश कीजिए।

* प्राचीन काल के वस्त्रों व वेशभूषाओं का अवलोकन करने के लिए स्थानीय संग्रहालयों की यात्रा कीजिए। वस्त्रों द्वारा एक विशिष्ट काल के इतिहास का अध्ययन करने के लिए चित्र बनाइए।

यदि संभव हो तो, बुनाई केन्द्रों अथवा शिल्पकारों के घरों की यात्रा के कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि छात्रों को वस्त्रों को तैयार करने में प्रयुक्त विभिन्न प्रक्रियाओं की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त हो सके।

* सरल कशीदाकारी टांकों को सीखिए। एक कपड़े के विभिन्न आकारों और नाप के छोटे-छोटे टुकड़े काटकर उन्हें एक बड़े कपड़े पर व्यवस्थित कर सिलाई करिए, ताकि अभिकल्पना या डिजाइन बन सके। इसे गोटा पट्टा कार्य कहते हैं। इसी प्रकार, पुराने या सस्ते वस्त्रों के प्रयोग से जोड़-जाड़ या गुदड़ी कार्य (पैच वर्क) अभिकल्पनाओं को निर्मित किया जा सकता है।

* छात्रों को ब्लॉक (ठप्पा), मुहरा अथवा स्टेंसिल छपाई की कार्यपद्धतियों को सीखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। लकड़ी के ठप्पों पर सरल ज्यामितीय या फूल-पत्तियों से युक्त अभिकल्पनाएं बनाई जा सकती हैं। छात्रों को ठप्पा निर्माताओं और छपाई करने वालों से मिलने जाने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

* अनुरेखण कीजिए या स्वयं अपना डिजाइन बनाइए, उसे कपड़े पर उतारिए, फिर वनस्पति या पत्थरों से स्वयं अपने रंग तैयार कीजिए और अपनी अभिकल्पना को रंग देने में इनका प्रयोग कीजिए।

* बुनाई, छपाई अथवा कशीदाकारी की बुनावट, अभिकल्पना और कार्य पद्धतियों का अध्ययन करने के लिए छात्रों द्वारा एकत्रित विविध वस्त्रों की एक प्रदर्शनी आयोजित की जा सकती है। प्रदर्शनी के आवपास, छात्रों के समूह चर्चा कर सकते हैं और चित्रादि भी बना सकते हैं।

* बांधनी, चित्रकारी और छपाई की कार्य पद्धतियों का प्रदर्शन करने के लिए स्थानीय शिल्पकारों और कलाकारों को स्कूल में आमंत्रित किया जाना चाहिए। प्रदर्शन के पश्चात् छात्रों को इन पद्धतियों को कार्यान्वित करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

छात्रों को निम्नलिखित विषयों पर कहानी अथवा कविता लिखने के लिए कहा जाना चाहिए:

- कपास - यह किस क्षेत्र में उगाई जाती है, इसका तागा कैसे बनाया जाता है, बुनाई की कार्य पद्धति आदि।

- रेशम - रेशम का कीड़ा, पत्तियाँ, जिन पर कीड़ा पोषित होता है, कोया को संसाधित किस प्रकार किया जाता है और फिर उसे कैसे रेशम के धागे में परिवर्तित किया जाता है।

- ऊन - जानवर कहाँ पाए जाते हैं, लोम (फर) को कैसे हटाया जाता है और फिर उसे बुनाई के लिए तागे के रूप में कैसे तैयार किया जाता है।

इन गतिविधियों को इतिहास, भूगोल, भाषा, कला, गणित और अभिकल्पना कला के अध्ययन के साथ जोड़िए।

इस फोलियो में प्रस्तुत चित्रों को राज्यवार प्रस्तुत किया गया है।

Learning about techniques of craft making can be fun and at the same time useful. Imaginative creations can be made on textiles from simple needle crafts to painting, printing and weaving.

A few activities for the study of textiles are suggested below. The aim of such activities is to create an understanding and appreciation for the beauty and richness of Indian fabrics as also to motivate students to learn more about local fabric designs and techniques used. On completion of such studies, the students would be able to relate their findings in design and technique to the geophysical features, social and religious festivals and other areas of knowledge.

* Study the traditional textiles of your region. Observe the weaving techniques, colours, designs to understand the aesthetic values. Make a comparative study with textiles from other states.

* Collect designs on old fabrics found in your homes and make a scrapbook. Try to understand the mathematical precision that has been used in creating the design for the weave.

* Visit the local museums to observe the textiles and costumes of ancient times. Make drawings to study the history of a particular period through costumes.

If possible, visits to weaving centres or homes of craftsmen should be organised to enable the students to get a first-hand knowledge of the different processes involved in preparation of textiles.

* Learn simple embroidery stitches. Cut small pieces of cloth of different shapes and sizes of one fabric and stitch them on to a large piece to form a design. This is known as applique work. Similarly, patch work designs can be made from old or inexpensive fabrics.

* Encourage students to learn the techniques of block, stamp or stencil, printing. Simple geometric or floral designs can be made on wooden blocks. They can also be encouraged to visit block makers and printers.

* Trace or make your own design and transfer it on to the fabric then try making your own colours from vegetables or stones and use these to paint the design on the material.

* An exhibition may be organised of the various fabrics collected by students to study the texture, design and technique of weaving, printing or embroidery. Around the exhibition, groups of students can hold discussions and make drawings.

* Local craftsmen and artists may be invited to the school to demonstrate tie and dye, painting and printing techniques. Students may be encouraged to practice these after the demonstration.

Students may be asked to write a story or poem on :

- Cotton-in which area it grows, how the yarn is made, weaving techniques, etc.

- Silk - the silk worm, the leaves it feeds on, how the cocoon is treated and then made into yarn for weaving.

- Wool-where the animals are found, how the fur is removed and prepared into yarn for weaving.

Relate these activities to the study of history, geography, language, arts, mathematics and designing.

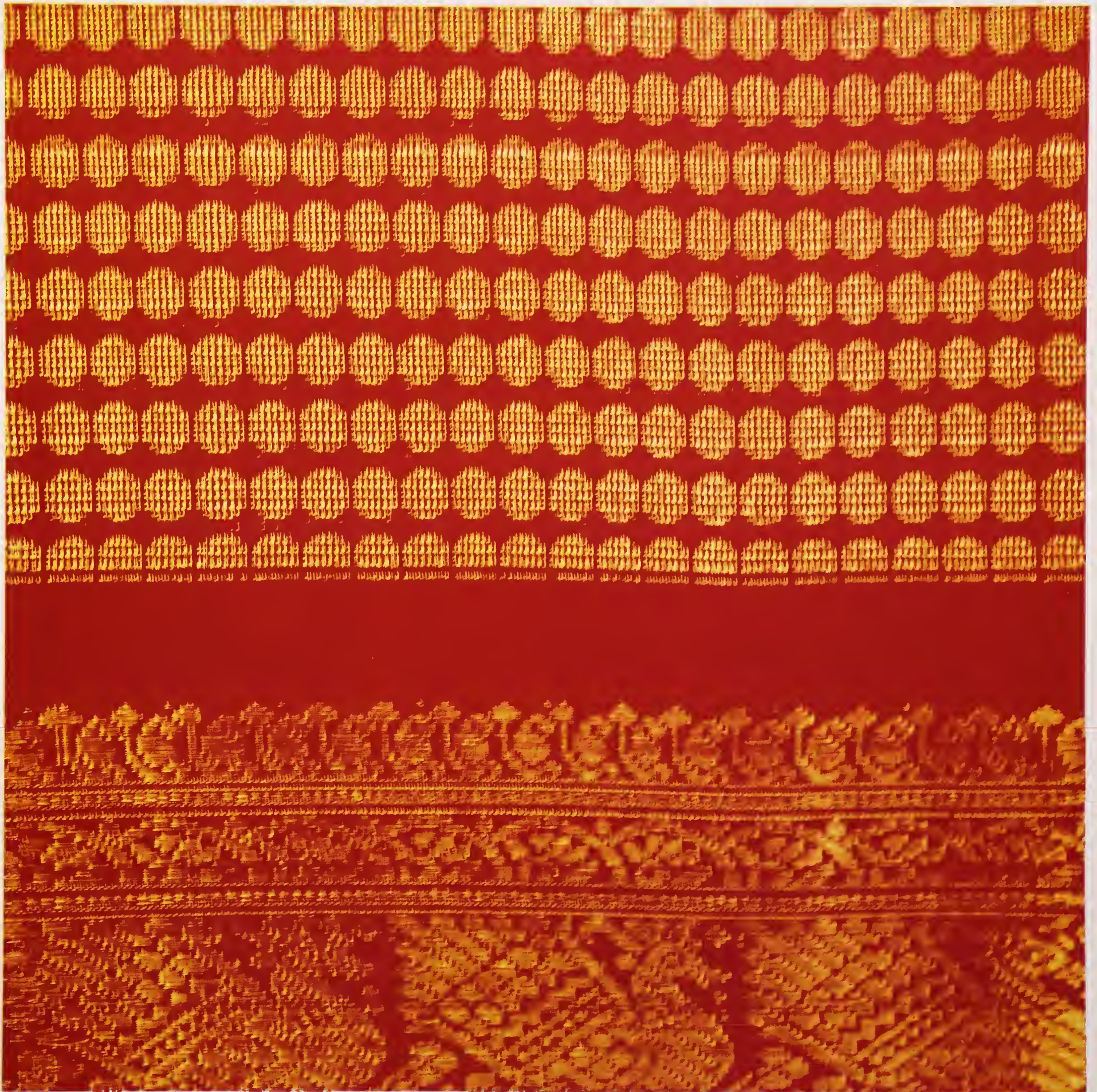
The visuals in this folio have been arranged regionwise.



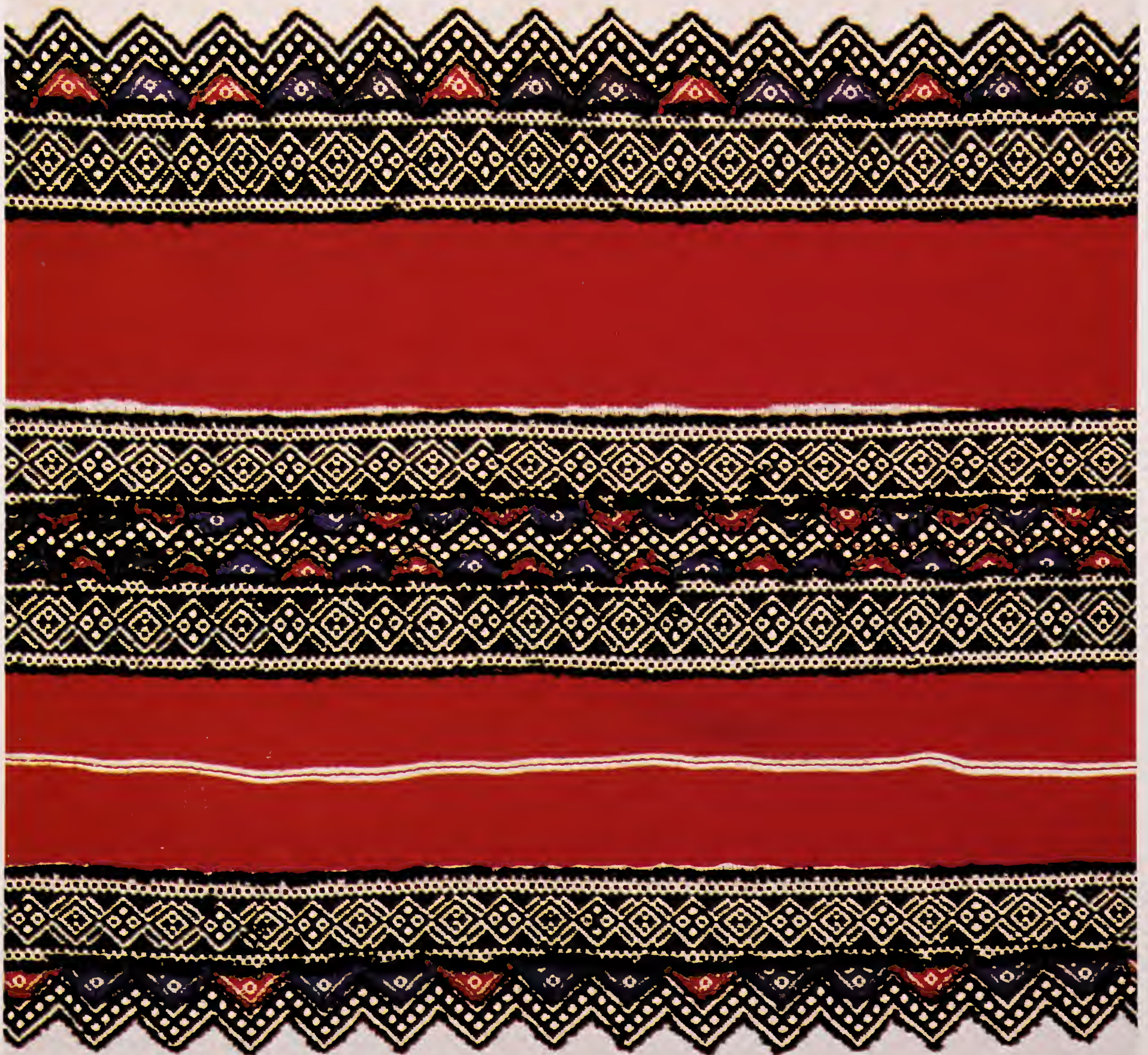
1. Pochampalli Silk Saree, Andhra Pradesh



2. Embroidered Kasuti Silk Saree, Karnataka



3. Kanchipuram Silk Saree, Tamil Nadu



4. Toda Embroidery, Tamil Nadu



5. Mekhala, Assam



6. Jhapi Design, Gamucha, Assam



7. Chhapra, Jacket, Tripura



8. Embroidered Border, Phanek, Manipur



9. Embroidered Dhacca Silk Saree, West Bengal



10. Baluchari Silk Saree, West Bengal



11. Ikat Silk Saree, Odisha



12. Zilang Shawl and Pusalendra Skirt, Arunachal Pradesh

